प्राक्कथन
आमुख
प्रस्तावना
परिचय
अध्याय पैतालीस
कृष्ण द्वारा अपने गुरु-पुत्र की रक्षा
अध्याय का सारांश
कृष्ण द्वारा वसुदेव तथा देवकी को ढाढ़स बँधाना
कोई अपने माता पिता से उऋण नहीं हो सकता
वसुदेव तथा देवकी भाव-विभोर
कृष्ण द्वारा वनवासी जातियों का पुनर्वास
शीघ्र ही व्रज लौटने का नन्द से कृष्ण का वायदा
कृष्ण तथा बलराम का द्विज संस्कार
शिक्षा के लिए कृष्ण तथा बलराम का सान्दीपनि मुनि के पास जाना
दोनों प्रभुओं द्वारा चौंसठ दिनों में चौसठों कलाएँ सीखना
कृष्ण द्वारा पञ्चजन असुर का वध
भगवान् द्वारा गुरु के पुत्र को वापस लाया जाना
कृष्ण तथा बलराम के लौटने पर मथुरावासियों में हर्ष की लहर
अध्याय छियालीस
उद्धव की वृन्दावन यात्रा
अध्याय का सारांश
कृष्ण द्वारा उद्धव को वृन्दावन भेजा जाना
उद्धव का सूर्यास्त के समय व्रज पहुँचना
नन्द द्वारा उद्धव का सत्कार
नन्द द्वारा कृष्ण की याद
गोपराज द्वारा कृष्ण की लीलाओं का स्मरण
माता यशोदा के नेत्रों से आँसुओं की झड़ी तथा
स्तनों से दुग्ध का बहना उद्धव द्वारा नन्द तथा यशोदा की प्रशंसा
उद्धव का नन्द तथा यशोदा को दिव्य दर्शन द्वारा समझाना
प्रात: जागकर गोपियों द्वारा दधिमन्थन
अध्याय सैंतालीस
भ्रमर गीत
अध्याय का सारांश
गोपियों का उद्धव को घेर लेना
गोपियों द्वारा कृष्ण के प्रति प्रेममय क्रोध की अभिव्यक्ति
राधारानी द्वारा प्रेमोन्मादवश भ्रमर को कृष्ण-दूत समझना

भ्रमर गीत
उद्धव द्वारा गोपियों की प्रशंसा तथा उनसे कृष्ण सन्देश कहना
गोपियों से कृष्ण का कथन, ''तुम मुझसे कभी भी विलग नहीं''
''मैं तुम्हारे ध्यान को प्रगाढ़ करना चाहता था।''
कृष्ण का सन्देश सुनकर गोपियाँ प्रसन्न
मान के साथ वे उनकी वापसी की आकांक्षा व्यक्त करती हैं
गोपियाँ कृष्ण से पुनर्मिलन की आशा छोड़ने वाली नहीं
गोपियाँ कृष्ण के लिए रोने लगती हैं
वृन्दावन के लोगों को सान्त्वना देने के लिए उद्धव का कई मास तक वहाँ रहते जाना
उद्धव गोपियों की प्रशंसा में गाते हैं
लक्ष्मी जी भी गोपियों के समान भाग्यशालिनी नहीं
उद्धव का गोपियों को पुन: पुन: नमस्कार करना
उद्धव का मथुरा लौटना
अध्याय अड़तालीस
कृष्ण द्वारा अपने भक्तों की तुष्टि
अध्याय का सारांश
कृष्ण तथा उद्धव का त्रिवक्रा के घर जाना
त्रिवक्रा द्वारा अतिथियों का सत्कार
कृष्ण का त्रिवक्रा के साथ रमण
त्रिवक्रा का कृष्ण से रुकने के लिए याचना
कृष्ण, बलराम तथा उद्धव का अक्रूर के यहाँ जाना
अक्रूर द्वारा कृष्ण तथा बलराम की पूजा
अक्रूर द्वारा कृष्ण का यशोगान
अक्रूर द्वारा भौतिक स्नेह से विरक्ति की प्रार्थना
कृष्ण द्वारा अक्रूर की बड़ाई तथा उन्हें हस्तिनापुर भेजना
अध्याय उनचास
अक्रूर का हस्तिनापुर जाना
अध्याय का सारांश
अपने पौरव मित्रों तथा सम्बन्धियों द्वारा अक्रूर का सत्कार
कुन्ती देवी तथा विदुर द्वारा अक्रूर से धृतराष्ट्र के पुत्रों के षड्यंत्र बाबत बताया जाना
महारानी कुन्ती का विलाप
विदुर तथा अक्रूर का कुन्ती को ढाढस बँधाना
अक्रूर का धृतराष्ट्र को नेक सलाह देना
धृतराष्ट्र द्वारा अक्रूर के उपदेशों की सराहना किन्तु उनका पालन करने में अक्षमता
अक्रूर का मथुरा लौट कर कृष्ण तथा बलराम को सूचना देना
अध्याय पचास

कृष्ण द्वारा द्वारका पुरी की स्थापना

अध्याय का सारांश
जरासन्ध द्वारा तेईस अक्षौहिणी सेना लेकर मथुरा को घेर लेना
कृष्ण द्वारा जरासन्ध की सेनाओं के विनाश का निश्चय किन्तु सम्प्रति उसे छोड़ देना
आकाश से दो दैवी रथों का उतरना
जरासन्ध से लड़ने के लिए कृष्ण, बलराम तथा छोटी-सी
सैनिक टुकड़ी का मथुरा से बाहर जाना
जरासन्ध द्वारा कृष्ण का अपमान तथा बलराम का ललकारा जाना
जरासन्ध द्वारा कृष्ण तथा बलराम पर आक्रमण
अविरत बाण वर्षा से कृष्ण द्वारा जरासन्ध की सेनाओं का विनाश
युद्ध-भूमि में भीषण नरसंहार
जरासन्ध को बन्दी बनाकर छोड़ा जाना
खिन्न होकर जरासन्ध का मगध लौटना
मथुरा में कृष्ण का वीरोचित सम्मान
जरासन्ध द्वारा मथुरा पर सत्रह बार आक्रमण और उसकी हार
कालयवन द्वारा मथुरा का घेरा जाना
कृष्ण द्वारा द्वारका का निर्माण
कृष्ण द्वारा प्रजा को द्वारका पहुँचाया जाना

अध्याय इक्यावन

मुचुकुन्द का उद्धार

अध्याय का सारांश
कृष्ण का निरस्त्र होकर मथुरा से बहिर्गमन
कृष्ण द्वारा कालयवन को पर्वत गुफा की ओर ले जाया जाना
मुचुकुन्द का कालयवन को अपनी दृष्टिपात से भस्म करना मुचुकुन्द की कथा
मुचुकुन्द का देवताओं से निद्रा का वरदान प्राप्त करना
मुचुकुन्द द्वारा कृष्ण सौन्दर्य निहारा जाना तथा उनसे अपनी कथा बतलाना
भगवान् कृष्ण द्वारा मुचुकुन्द को अपनी महिमा बतलाना
कृष्ण द्वारा मुचुकुन्द को मनचाहा वरदान देना
मुचुकुन्द का भौतिक जीवन में अपनी दशा पर शोक व्यक्त किया जाना
मुचुकुन्द को राजपद अस्वीकार होना
मुचुकुन्द द्वारा कृष्ण के चरणकमलों की सेवा का वर माँगा जाना
कृष्ण द्वारा मुचुकुन्द को शुद्ध-भक्ति का आशीर्वाद देना

अध्याय बावन

भगवान् कृष्ण के लिए रुक्मिणी-सन्देश

अध्याय का सारांश
मुचुकुन्द का बदरिकाश्रम जाकर भगवान् की पूजा के लिए घोर तपस्या करना

कृष्ण तथा बलराम का जरासन्ध की सेनाओं से डरकर भागना
कृष्ण तथा बलराम का प्रवर्षण पर्वत पर चढ़ना
पर्वत से कूद कर दोनों का द्वारका वापस जाना
राजा परीक्षित द्वारा शुकदेव गोस्वामी से रुक्मिणी के साथ कृष्ण के विवाह के विषय में प्रश्न पूछा जाना
रुक्मिणी द्वारा कृष्ण के विषय में सुनकर एकमात्र उन्हीं से विवाह करने का निश्चय करना
रुक्मिणी द्वारा ब्राह्मण से कृष्ण के पास द्वारका सन्देश भेजा जाना
कृष्ण द्वारा ब्राह्मण का सत्कार तथा उसके आने का प्रयोजन पूछा जाना
कृष्ण को रुक्मिणी का सन्देश
अध्याय तिरपन
कृष्ण द्वारा रुक्मिणी का अपहरण
अध्याय का सारांश
भगवान् कृष्ण का तुरंत ही विदर्भ जाना
राजा भीष्मक तथा दमघोष द्वारा विवाह के पूर्व के कृत्य सम्पन्न
शिशुपाल तथा अन्य ईर्ष्यालु राजाओं द्वारा कृष्ण से युद्ध करने का व्रत लेना
कृष्ण के न आने से राजकुमारी रुक्मिणी का पश्चाताप
ब्राह्मण का आगमन और कृष्ण के आने की सूचना की घोषणा
राजा भीष्मक द्वारा कृष्ण तथा बलराम की आवभगत
विदर्भवासी अपने नेत्रों से कृष्ण के कमल-मुख का मधुपान करते हैं
रुक्मिणी का अम्बिका मन्दिर जाना
कृष्ण द्वारा सुन्दरी रुक्मिणी का अपहरण
सिंह की तरह कृष्ण द्वारा सियार जैसे राजाओं के बीच से रुक्मिणी का हरण
अध्याय चौवन
कृष्ण-रुक्मिणी विवाह
अध्याय का सारांश
ईर्ष्यालु राजाओं द्वारा यदुसेना पर आक्रमण और उनकी पराजय
जरासन्ध द्वारा शिशुपाल को सान्त्वना देना
बदला लेने के लिए रुक्मी द्वारा अकेले ही कृष्ण का पीछा करना
रुक्मी द्वारा कृष्ण को युद्ध के लिए ललकारना
कृष्ण द्वारा रुक्मी का विरूपित और अपमानित होना
बलराम का कृष्ण तथा रुक्मिणी को उपदेश देना
हताश रुक्मी द्वारा भोजकट नगरी का निर्माण करना
द्वारका में कृष्ण तथा रुक्मिणी का विवाह
कृष्ण तथा रुक्मिणी के मिलन से द्वारकावासी अति प्रसन्न
अध्याय पचपन
प्रद्युम्न-कथा

अध्याय का सारांश
कामदेव का शरीर धारण किये प्रद्युम्न का जन्म
शम्बर असुर द्वारा प्रद्युम्न अपहरण और समुद्र में फेंका जाना
शम्बर के रसोईघर में मछली के पेट से प्रद्युम्न का प्रकट होना
मायावती प्रद्युम्न के प्रति प्रेमासक्त
मायावती द्वारा कामदेव की पत्नी रति के रूप में अपनी पहचान का उद्घाटन
प्रद्युम्न तथा शम्बर के मध्य युद्ध
प्रद्युम्न द्वारा शम्बर का शिरच्छेदन
रति द्वारा प्रद्युम्न को द्वारका पहुँचाया जाना
रुक्मिणी का अपने बिछड़े पुत्र से मिलन
प्रद्युम्न की वापसी पर द्वारका में आनन्द मंगल

अध्याय छप्पन

स्यमन्तक मणि

अध्याय का सारांश
सूर्यदेव द्वारा सत्राजित को स्यमन्तक मणि का दिया जाना
सत्राजित द्वारा द्वारकावासियों को मणि के तेज से चौंधियाना
स्यमन्तक मणि के गुण
सत्राजित के भाई का वध तथा मणि की चोरी
अपने कलंक को दूर करने के लिए कृष्ण द्वारा प्रसेन का जंगल में खोजा जाना
कृष्ण द्वारा मणि का जाम्बवान की गुफा में पाया जाना
कृष्ण तथा जाम्बवान में युद्ध
जाम्बवान द्वारा भगवान् कृष्ण को आत्म-समर्पण
कृष्ण द्वारा जाम्बवान को आशीर्वाद
जाम्बवान द्वारा कृष्ण को मणि तथा अपनी पुत्री जाम्बवती का दिया जाना
मणि तथा जाम्बवती को लेकर कृष्ण के द्वारका लौटने पर वहाँ के निवासियों में हर्षोल्लास
कृष्ण द्वारा सत्राजित को मणि लौटाना
सत्राजित द्वारा कृष्ण को मणि तथा अपनी पुत्री सत्यभामा की भेंट
कृष्ण द्वारा सत्राजित को पुन: मणि लौटाया जाना

अध्याय सत्तावन

सत्राजित की हत्या और मणि की वापसी

अध्याय का सारांश
पाण्डवों की 'मृत्यु' पर कृष्ण द्वारा शोक का दिखावा
शतधन्वा द्वारा सत्राजित की हत्या तथा स्यमन्तक मणि लिया जाना
अक्रूर तथा कृतवर्मा द्वारा शतधन्वा की सहायता किये जाने से इनकार
भयभीत शतधन्वा द्वारा अक्रूर को मणि का दिया जाना और घोड़े पर चढ़कर द्वारका से भागना
कृष्ण द्वारा शतधन्वा का सिर काटा जाना और उसके शरीर में मणि की खोज

बलराम द्वारा मिथिला के राजा के यहाँ जाना
कृतवर्मा तथा अक्रूर का द्वारका से भागना
द्वारका में उत्पात
भगवान् कृष्ण द्वारा अक्रूर को द्वारका बुलाया जाना
मणि दिखाकर अक्रूर द्वारा भगवान् के विषय में उड़ती अफवाहों का खंडन
श्रोताओं को आशीर्वाद

अध्याय अट्ठावन

श्रीकृष्ण का पाँच कुमारियों से विवाह

अध्याय का सारांश
पाण्डवों से भेंट करने कृष्ण का इन्द्रप्रस्थ जाना
महारानी कुन्ती द्वारा बड़े स्नेह से कृष्ण का सत्कार
कृष्ण द्वारा इन्द्रप्रस्थ में वर्षाऋतु का बिताया जाना
अर्जुन तथा कृष्ण का जंगल में एक सुन्दरी देखना
श्रीकालिन्दी का अर्जुन को अपनी पहचान बताना
कालिन्दी को कृष्ण द्वारा इन्द्रप्रस्थ ले जाया जाना
अग्नि द्वारा अर्जुन को धनुष, घोड़े, रथ, तरकस तथा कवच का दान
कृष्ण का द्वारका लौटना और कालिन्दी से विवाह करना
भगवान् द्वारा मित्रविन्दा का अपहरण और विवाह
राजकुमारी नाग्नजिती द्वारा कृष्ण को पति रूप में पाने की प्रार्थना
सातों साँड़ों को दमित करके कृष्ण द्वारा नाग्नजिती के साथ विवाह करना
कौशल राज्य में हर्षोल्लास
कृष्ण द्वारा भद्रा तथा लक्ष्मणा से विवाह करना

अध्याय उनसठ

नरकासुर का वध

अध्याय का सारांश
गरुड़ पर सवार होकर सत्यभामा के साथ कृष्ण की प्राग्ज्योषितपुर की यात्रा
कृष्ण द्वारा नगरी के दुर्ग का विनाश
पाँच सिरों वाले मुर असुर का गरुड़ से युद्ध
कृष्ण द्वारा मुर के शिरों का काटा जाना और उसके सात पुत्रों का वध
कृष्ण द्वारा नरक की सेना का विध्वंस
कृष्ण द्वारा नरक का शिरच्छेद
भूमिदेवी पृथ्वी द्वारा भगवान् की प्रशंसा तथा नमस्कार करना
नरकासुर को आशीर्वाद देकर उसके महल में कृष्ण का प्रवेश
नरकासुर द्वारा अपहरण की गई सोलह हजार एक सौ कुमारियों को कृष्ण द्वारा द्वारका भेजा जाना
सत्यभामा को प्रसन्न करने के लिए कृष्ण द्वारा इन्द्रलोक से पारिजात वृक्ष की चोरी
द्वारका में कृष्ण द्वारा भिन्न रूपों में विस्तार और राजकुमारियों के साथ विवाह

कृष्ण की रानियों द्वारा विविध प्रकार से उनकी सेवा
अध्याय साठ
रुक्मिणी के साथ कृष्ण का परिहास
अध्याय का सारांश
रुक्मिणी के भव्य कक्षों का वर्णन
रुक्मिणी द्वारा कृष्ण पर पंखा झलना
कृष्ण का रानी रुक्मिणी को परिहास में तंग करना
कृष्ण की घोषणा, ''हम स्त्रियों, बच्चों या सम्पत्ति की तनिक भी परवाह नहीं करते''
कृष्ण के वचनों के आघात से रुक्मिणी मूर्छित
कृष्ण द्वारा रुक्मिणी को सान्त्वना
रुक्मिणी शान्त हुईं
रानी रुक्मिणी द्वारा कृष्ण के परिहास का चातुरीपूर्वक उत्तर
''आपके सेवक साम्राज्य के अवसर को दुत्कार देते हैं''
''सम्पत्ति से अन्धे लोग आपको कालरूप नहीं पहचानते''
''अन्य किसी राजकुमार को वरण करने में मेरी कौन सी रुचि होगी''
''आपके चरणकमलों की सुगंध सूँघने के बाद ऐसी कौन स्त्री
होगी जो अन्य पुरुष की शरण में जायेगी?''
''जो स्त्री आपका वहिष्कार करती है उसे जीवित शव को
अपना पति स्वीकार करना चाहिए''
कृष्ण द्वारा रुक्मिणी की प्रशंसा तथा भौतिकतावादियों की निन्दा
अध्याय इकसठ
बलराम द्वारा रुक्मी का वध
अध्याय का सारांश
कृष्ण की प्रत्येक रानी का अपने को पति-प्रिया मानना
रानियाँ कृष्ण की इन्द्रियों को चंचल नहीं बना सकतीं
भगवान् की प्रमुख रानियों तथा उनके पुत्रों की सूची
रुक्मिणी को प्रसन्न करने के लिए रुक्मी अपनी पुत्री का विवाह
प्रद्युम्न के साथ करने के लिए सहमत
दुष्ट राजाओं द्वारा पाँसे के खेल में बलराम को धोखा देने के लिए रुक्मी को उकसाना
रुक्मी द्वारा बलराम का अपमान करना और बलराम का गदा द्वारा रुक्मी की हत्या करना
अध्याय बासठ
उषा-अनिरुद्ध मिलन
अध्याय का सारांश
बाणासुर की कथा
मूर्ख बाण द्वारा शिव के क्रोध को भड़काया जाना
बाणपुत्री उषा को स्वप्न में अपना प्रेमी अनिरुद्ध दिखना

चित्रलेखा द्वारा उषा के स्वप्न के बारे में पूछताछ
चित्रलेखा द्वारा उषा के सम्भावित प्रेमियों का रेखांकन
अनिरुद्ध का द्वारका से शोणितपुर उड़ा ले जाया जाना
उषा का अनिरुद्ध के साथ महल के एकान्त कक्षों में रमण
बाण को उषा के साथ अनिरुद्ध के मिलन का पता चलना
बाण द्वारा नागपाश से अनिरुद्ध का बाँधा जाना

अध्याय तिरसठ

बाणासुर और भगवान् कृष्ण का युद्ध

अध्याय का सारांश
अनिरुद्ध को छुड़ाने के लिए कृष्ण तथा बलराम आदि वृष्णियों का शोणितपुर जाना
शिवजी की सहायता से बाण का वृष्णि सेना पर धावा बोलना
कृष्ण तथा शिव के मध्य युद्ध
प्रद्युम्न तथा बलराम द्वारा शत्रुओं का विनाश
बाण द्वारा कृष्ण पर आक्रमण और बाण की नग्न माता द्वारा उसकी रक्षा करना
शिव-ज्वर तथा विष्णु-ज्वर के बीच युद्ध
शिव-ज्वर द्वारा कृष्ण की स्तुति
शिव-ज्वर को कृष्ण का आशीर्वाद
बाण द्वारा कृष्ण पर आक्रमण और कृष्ण द्वारा उसकी भुजाओं का काटा जाना
बाण की ओर से शिव द्वारा कृष्ण की स्तुति
''हे प्रभु, आपका तिरस्कार करने वाला विषपान करता है''
कृष्ण द्वारा बाण को छोड़ा जाना और वर दिया जाना
कृष्ण, अनिरुद्ध, उषा तथा उनके दल का विजयी होकर द्वारका में प्रवेश

अध्याय चौंसठ

राजा नृग का उद्धार

अध्याय का सारांश
यदुवंश के नवयुवकों द्वारा कुएँ में बड़ी छिपकली देखना
कृष्ण द्वारा इस छिपकली का कुएँ से आसानी से निकाला जाना
राजा नृग द्वारा अपनी कथा बताया जाना
दानी नृग द्वारा भूल से ऐसी गाय का दान दिया जाना जो उसकी नहीं थी
दो ब्राह्मणों द्वारा एक ही गाय हेतु अधिकार जताया जाना
नृग का छिपकली बनना
राजा नृग द्वारा कृष्ण की महिमा का गायन
कृष्ण द्वारा तरुण यदुओं को ब्राह्मण की सम्पत्ति की पवित्रता के विषय में उपदेश
ब्राह्मण की सम्पत्ति चुराने वालों को नरक तथा कीट-जीवन मिलना

अध्याय पैंसठ

बलराम का वृन्दावन जाना

अध्याय का सारांश
रथ द्वारा बलराम की वृन्दावन की यात्रा
नन्द तथा यशोदा द्वारा बलराम का हर्ष के आँसुओं से सिक्त किया जाना
बलराम का गोपों से कुशल मंगल पूछना
गोपियों का बलराम से कृष्ण के बारे में पूछना
कृष्ण के विरहभाव में गोपियों का विलाप
बलराम द्वारा गोपियों को सान्त्वना देना
वृन्दावन के जंगल में गोपियों के साथ बलराम द्वारा रमण
मदोन्मत्त हुए बलराम द्वारा यमुना नदी को बुलाया जाना
यमुना देवी द्वारा बलराम से कृपा याचना करना
यमुना में गोपियों के साथ बलराम द्वारा क्रीड़ा

अध्याय छियासठ

पौण्ड्रक—छद्म वासुदेव

अध्याय का सारांश
मन्द बुद्धि पौण्ड्रक द्वारा वासुदेव होने का दावा
इस बहरूपिए को दण्ड देने के लिए कृष्ण की काशी यात्रा
पौण्ड्रक, काशिराज तथा तीन सेनाओं का कृष्ण से युद्ध
कृष्ण द्वारा शत्रुसेना का संहार तथा पौण्ड्रक और काशिराज के सिरों का काटा जाना
पौण्ड्रक को वैकुण्ठ भेजा जाना
काशी के निवासियों द्वारा अपने राजा की मृत्यु पर शोक
सुदक्षिण द्वारा कृष्ण का वध करने के लिए अग्नि असुर का आह्वान
कृष्ण द्वारा द्वारका के भयभीत निवासियों को सुरक्षा का आश्वासन
भगवान् के सुदर्शन-चक्र द्वारा अभिचार असुर का मोड़ा जाना
जिससे सुदक्षिण भस्म हो जाता है
कृष्ण के चक्र द्वारा वाराणसी का विध्वंस
श्रोताओं को आशीर्वाद

अध्याय सतसठ

बलराम द्वारा द्विविद वानर का वध

अध्याय का सारांश
द्विविद वानर द्वारा उत्पात
वानर द्वारा बलराम तथा उनकी सखियों का सताया जाना
द्विविद द्वारा वारुणी पात्र का तोड़ा जाना जिससे बलराम क्रुद्ध होते हैं
बलराम तथा द्विविद के मध्य युद्ध
द्विविद द्वारा बलराम पर पत्थरों की वर्षा
बलराम द्वारा अपनी गदा से द्विविदा का प्राणान्त करना

अध्याय अडसठ

साम्ब का विवाह

अध्याय का सारांश
साम्ब द्वारा लक्ष्मणा का अपहरण
साम्ब द्वारा कुरुओं के दल से युद्ध
छह कुरुओं द्वारा साम्ब को बन्दी बनाया जाना
बलराम का अपने संगियों के साथ हस्तिनापुर की यात्रा करना
कुरुओं द्वारा बलराम की पूजा
बलराम द्वारा साम्ब को छोड़ने के लिए राजा उग्रसेन का आदेश बतलाना
कुरुओं द्वारा यदुओं को छोटा करके मानना और उग्रसेन की माँग को ठुकराना
कुरुओं की धृष्टता से बलराम क्रुद्ध
''जरा देखो तो कुरुगण अपनी तथाकथित शक्ति से कितने गर्वित हैं!''
बलराम द्वारा अपने हल से हस्तिनापुर को गंगा के भीतर खींचना
कौरवों द्वारा बलराम से दया की भीख
बलराम द्वारा कुरुओं की सुरक्षा का आश्वासन
साम्ब तथा लक्ष्मणा के साथ बलराम का द्वारका लौटना

अध्याय उनहत्तर

नारद मुनि द्वारा द्वारका में भगवान् कृष्ण के महलों को देखना

अध्याय का सारांश
नारद मुनि का रमणीय द्वारका में प्रवेश
नारद द्वारा कृष्ण को एक महल में अपनी रानी के साथ विश्राम करते देखना
भगवान् कृष्ण द्वारा नारद का सम्मान तथा पूजन
नारद द्वारा कृष्ण से उन्हें सदैव स्मरण रखने की शक्ति प्रदान करने की याचना
महर्षि द्वारा कृष्ण को विभिन्न महलों में अति व्यस्त देखना
कहीं कृष्ण यज्ञाग्नि में आहुतियाँ डाल रहे हैं
कहीं कृष्ण घोड़े, हाथी तथा रथों पर सवारी करते हैं
कहीं पर वे भगवान् का ध्यान करते होते हैं
कहीं पर कृष्ण देवताओं की पूजा करते हैं
नारद द्वारा योगेश्वर कृष्ण की स्तुति
सबों के लाभ हेतु भगवान् नारायण द्वारा सामान्य मनुष्य की
चालढाल का इस तरह अनुकरण करना
परिशिष्ट